Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, DEC-JAN, 2022, VOL-10/49
doi.org/10.21922/srjhsel.v10i49.07

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण

सुरेश चन्द्र[1] & प्रो0 यश पाल सिंह[2]

[1]पी–एच. डी., शोधार्थी, बी.एड/एम.एड. विभाग, महात्मा ज्योतिबाफुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली–243006, भारत।

[2]आचार्य, बी.एड/एम.एड. विभाग, महात्मा ज्योतिबाफुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली–243006, भारत।

Paper Received On: 25 JAN 2022
Peer Reviewed On: 31 JAN 2022
Published On: 1 FEB 2022

Abstract

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अभिभावकों के दृश्टिकोण का लिंग व उनकी आवासीय पृश्ठभूमि के आधार पर अध्ययन करना था। पस्तुत शोध कार्य वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। न्यादर्श के रूप में से शोधार्थी द्वारा बरेली मण्डल के चार जनपद (बदायूं, बरेली, शाहजाँपुर व पीलीभीत) में से दो जनपद बरेली व पीलीभीत के पाँच विकास खण्ड व दो नगर क्षेत्र के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के 200 अभिभावकों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन की लॉटरी प्रविधि के द्वारा किया गया। आकड़ों के संग्रहण हेतु शोधार्थी द्वारा स्व–निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। यह मापनी पाँच बिन्दु लिकर्ट मापनी (पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत) पर आधारित है। शोधार्थी द्वारा संग्रहीत आकड़ों के सांख्यिकी विश्लेशण हेतु टी–परीक्षण सांख्यिकी को उपयोग में लाया गया। प्रस्तुत अध्ययन से निश्कर्श प्राप्त हुए कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है साथ ही शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोण में भी सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति यही परिणाम प्राप्त हुआ।

मुख्य शब्दावली: *सर्व शिक्षा अभियान, प्रभावशीलता, अभिभावक व दृश्टिकोण।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

भारत दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में एक है। प्रत्येक राश्ट्र के विकास के लिए शिक्षा का गुणवत्तापूर्ण होना अत्यन्त आव यक है। मनुश्य शिक्षा के अभाव में पशु के समान व्यवहार करता है। शिक्षा मनुश्य की जन्मजात शक्तियों के निरन्तर विकास की एक प्रक्रिया है जो प्राकृतिक, सामंजस्यपूर्ण एवं प्रगितशील होती है (लाल, 2007)। 21वीं शताब्दी में एक राश्ट्र जो अपने भविश्य का निर्माण करने जा रहा है वह नवाचार की प्रक्रिया के माध्यम से अपने ज्ञान को धन एवं सामाजिक भलाई में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है। प्रत्येक राश्ट्र का भविश्य उसकी आने वाली पीढ़ी के हाथ में होता है। इसीलिए कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षा का गुणात्मक होना बहुत

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

आवश्यक है। इस बात को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित किये गये जिनमें राश्ट्रीय शिक्षा नीति, ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, संशोधित कार्य योजना, डी. पी. ई. पी., मिड–डे–मील योजना आदि में वह सफलता नहीं प्राप्त हुई जिसकी सरकार को अपेक्षा थी (गुप्ता, 1998)। वर्श–2000–01 में भारत सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना सर्व शिक्षा अभियान का शुभारम्भ किया गया जिसका उद्देश्य दस वर्श अन्दर उस प्रत्येक बालक जिसकी आयु 6–14 वर्श हो को निःशुल्क एवं अनिवार्य, सन्तोश जनक, गुणों से युक्त शिक्षा उपलब्ध कराना था।

पृश्ठभूमि

बालक के शारीरिक, मानसिक व नैतिक विकास के लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है (वर्मा एवं कुमारी, 2008)। शिक्षा की सार्थकता एवं महत्व को देखत हुए शोधकर्ता द्वारा पूर्व किय गये शोध अध्ययनों का अवलोकन अग्र प्रकार किया। राव (2009) ने सर्व भिक्षा अभियान में सामुदायिक प्रतिभागिता का अभावः एक वृत्तिक अध्ययन का अध्ययन किया और पाया कि विद्यालय गतिविधियों मे समुदाय की प्रतिभागिता का अभाव के साथ अभिभावकों में सर्व शिक्षा अभियान के प्रति जागरूकता का निम्न स्तर पाया गया। मण्डल, दास, पांडा एवं पालजैन एवं मित्तल (2011) ने सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावभीलता के सन्दर्भ में शिक्षकों, छात्रों व अभिभावकों की जागरूकता एवं कार्य संन्तुश्टि के स्तर का परीक्षण किया। इन्होंने अपने अवलोकन में पाया कि 6–14 आयु वर्ग के बालकों में विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति का अभाव पाया जबकि प्राथमिक शिक्षा के नामांकन में वृद्धि दर्ज की गयी साथ ही यह सुझाव दिया कि शिक्षकों के साथ अभिभावकों में योजना के प्रति जागरूता को और बढ़ाया जाये तो परिणाम और अच्छे प्राप्त हो सकते हैं। कुमारी एवं गिल (2016) ने सर्व शिक्षा अभियान में सामुदायिक भागीदारी की प्रभावभीलता का अध्ययन किया और यह निश्कर्श पाया कि सर्व भिक्षा अभियान के सफल संचालन हेतु विद्यालय एवं समुदाय के मध्य परस्पर सहभागिता का अभाव है। (2018) ने पभिचम बंगाल (भारत) के कृशि व्यावसायिक सामुदायों के मध्य अभिभावकों के दृश्टिकोण का अध्ययन किया तथा निश्कर्श प्राप्त किया कि कृशि व्यवसाय पर आधारित समुदायों का दृश्टिकोण सर्व शिक्षा अभियान के प्रति निम्न से मध्यम स्तर का रहा है। .गैर–कृशि व्यवसायों पर आधारित समुदायों का सर्व शिक्षा अभियान के प्रति दृश्टिकोण उच्च श्रेणी का रहा है। रेड्डी एवं रॉव (2019) ने सर्व शिक्षा अभियान के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण किया और पाया कि पुरूश एवं महिला अभिभावकों का दृश्टिकोण समान है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अभिभावकों के दृश्टिकोण का अध्ययन किया।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य अग्र प्रकार है–

1. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावभीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण का अध्ययन करना।
2. सर्व भिक्षा अभियान की प्रभावभीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोण का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं अग्र प्रकार है–

1. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावभीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सर्व भिक्षा अभियान की प्रभावभीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति वर्णनात्मक है जिसकी सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध वर्तमान परिस्थितियों, प्रचलित विश्वासों दृश्टिकोण या स्थापित अभिवृतियों एवं अभिमतों से होता है, जिसमें किसी क्षेत्र, समुह या संस्था की वर्ममान स्थिति को जानने, विश्लेशित करने, तथा प्रतिवेदित करने का प्रयास किया जाता है (गुप्ता, 2017)।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली मण्डल (बदायूं, बरेली, शाहजहाँपुर व पीलीभीत जनपद) में संचालित सरकारी प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों को सम्मिलित किया गया।

न्यादर्शन व न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के चयन हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली मण्डल के (बदायूं, बरेली, शाहजाँपुर व पीलीभीत जनपद) में से दो जनपद बरेली व पीलीभीत के पाँच विकास खण्ड व दो नगर क्षेत्र के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के 200 अभिभावकों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन की लॉटरी प्रविधि के द्वारा किया गया।

तालिका–1
न्यादर्श का विवरण

क्रं. सं.	चर	चर का स्तर	संख्या	योग
1	लिंग	पुरूश	111	200
		महिला	89	
2	आवासीय पृश्ठभूमि	शहरी	66	200
		ग्रामीण	134	

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी के द्वारा सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अभिभावकों के दृश्टिकोण मापन हेतु अपने शोध पर्यवेक्षक के निर्देशन में एक दृश्टिकोण मापनी का निर्माण किया गया। यह मापनी लिकर्ट के पाँच बिन्दु (पूर्णतः सहमत, सहमत कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत) पर आधारित है। प्रस्तुत दृश्टिकोण मापनी में कुल 20 कथनों को सम्मिलित किया गया।

तालिका–2

दृष्टिकोण मापनी में धनात्मक एवं नकारात्मक कथनों का विवरण

क्र. सं.	कथनों की प्रकृति	कथनों की संख्या	मापनी में कथनों की क्रम संख्या
1	धनात्मक	16	1, 2, 3, 4, 5, 6, 8, 10, 11, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19
2	नकारात्मक	4	7,9,12,20

फलांकन प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने इस मापनी पर अभिभावकों द्वारा प्राप्ताकों का फलांकन, फलांकन कुंजी की सहायता से किया। अभिभावकों को सकारात्मक कथनों पर पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत पर क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 तथा नकारात्मक कथनों पर पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत, पूर्णतः असहमत पर क्रम ाः 1, 2, 3, 4, 5 अंक प्रदान किये गये। इस प्रकार अभिभावकों दृश्टिकोण मापनी पर प्राप्तांकों का न्यूनतम एवं अधिकतम प्रसार 20 से 100 के मध्य था।

आंकडो के विश्लेशण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध में सभी आंकड़ों के विश्लेशण हेतु शोधार्थी द्वारा आवृति प्रतिशत व टी–परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

तालिका–3

ग्रेड प्रणाली

वर्ग	20–30	30–40	40–50	50–60	60–70	70–80	80–90	90–100
ग्रेड	अति सूक्ष्म	सूक्ष्म	अति निम्न	निम्न	औसत	उच्च	अति उच्च	अत्यधिक उच्च

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तालिका–4

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति दृष्टिकोण मापनी पर अभिभावकों का दृष्टिकोण

वर्ग	पुरूष						महिला					
	शहरी		ग्रामीण		कुल पुरूष		शहरी		ग्रामीण		कुल महिला	
	f	□	f	□	F	□	f	□	f	□	F	□
20–30	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
30–40	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
40–50	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
50–60	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
60–70	2	6.90	4	4.88	6	5.41	2	5.41	3	5.77	5	5.62
70–80	18	62.07	49	59.75	67	60.36	27	72.97	35	67.31	62	69.66
80–90	9	31.03	29	35.37	38	34.23	8	21.62	14	26.92	22	24.72
90–100	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
i=10	**N=29**	**100 □**	**N=82**	**100 □**	**N=111**	**100 □**	**N=37**	**100 □**	**N=52**	**100 □**	**N=89**	**100 □**

तालिका 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि वर्ग 20–60 के मध्य शहरी पुरूश अभिभावकों, ग्रामीण पुरूश अभिभावकों व कुल पुरूश अभिभावकों की संख्या व उनके अंक प्राप्ति का प्रतिशत शून्य है। वर्ग 60–70 के मध्य शहरी पुरूश अभिभावकों, ग्रामीण पुरूश अभिभावकों व कुल पुरूश अभिभावकों की संख्या क्रमशः 2, 4 व 6 है जबकि उनका प्रतिशत क्रमशः 6.90, 4.88 व 5.41 है। वर्ग 70–80 के मध्य जिन शहरी पुरूश अभिभावकों, ग्रामीण पुरूश अभिभावकों व कुल पुरूश अभिभावकों ने जो अंक प्राप्त किये उनकी संख्या क्रमशः 18, 49 व 67 रही जबकि उनके अंक प्राप्ति का प्रतिशत क्रमशः 62.07, 59. 75 व 60.36 रहा है। वर्ग 80–90 के मध्य शहरी पुरूश अभिभावकों, ग्रामीण पुरूश अभिभावकों एवं कुल पुरूश अभिभावकों की संख्या क्रमशः 9, 29 एवं 38 है वहीं उनके उनके अंक प्राप्ति का प्रतिशत 31.01, 35.37 एवं 34.32 है। वर्ग 90–100 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले शहरी पुरूश अभिभावकों, ग्रामीण पुरूश अभिभावकों तथा कुल पुरूश अभिभावकों की संख्या व उनका प्रतिशत शून्य है। उपरोक्त तालिका के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि दृश्टिकोण मापनी पर सभी शहरी पुरूश अभिभावकों, ग्रामीण पुरूश अभिभावकों एवं कुल पुरूश अभिभवकों ने औसत ग्रेड से अधिक लेकिन अत्यधिक उच्च ग्रेड से कम अंक प्राप्त किये हैं जिससे ज्ञात होता है कि शहरी पुरूश अभिभावकों, ग्रामीण पुरूश अभिभावकों एवं कुल पुरूश अभिभावकों के दृश्टिकोण में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावाभीलता को सफल माना जा सकता है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तालिका 4 के अवलोकन से ही यह ज्ञात होता है कि वर्ग 20–60 के मध्य भाहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों व कुल महिला अभिभावकों की संख्या व उनका अंक प्रतिभात शून्य है। वर्ग 60–70 के मध्य शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों एवं कुल महिला अभिभावकों की संख्या क्रमशः 2, 3 एवं 5 है जबकि उनका अंक प्रतिभात 5.41, 5.77 एवं 5.62 है। वर्ग 70–80 के मध्य जिन शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों एवं कुल महिला अभिभावकों ने अंक प्राप्त किये है उनकी संख्या क्रमशः 27, 35 व 62 है उनका प्रतिभात 72.97, 67.31 व 69.66 रहा। वर्ग 80–90 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों एवं कुल महिला अभिभावकों की संख्या क्रमशः 8, 14 एवं 22 रहीं जबकि उनका प्रतिभात 21.62, 26.92 एवं 24.72 रहा। वर्ग 90–100 के मध्य शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों तथा कुल महिला अभिभावकों की संख्या तथा उनका अंक प्रतिंभात शून्य है। उपरोक्त तालिका अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि दृश्टिकोण मापनी पर सभी शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों व कुल महिला अभिभावकों ने भी औसत ग्रेड से अधिक व अत्यधिक उच्च ग्रेड से कम अंक प्राप्त किये हैं जिससे स्पश्ट होता है कि सभी पुरूश अभिभावकों की भाँति सभी महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में भी सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावभीलता को सफल माना जा सकता है।

तालिका–5

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	क्रान्तिक मूल्य	टी–मूल्य	टिप्पणी
पुरूश अभिभवाक	111	77.00	4.54	198	1.97	0.06	सार्थक नहीं
महिला अभिभावक	89	77.04	4.06				

सार्थकता स्तर 0.05

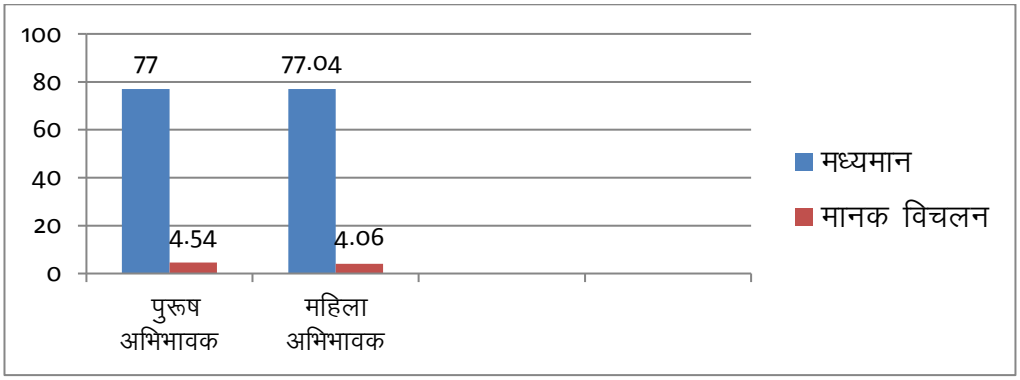

रेखाचित्र–1

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तालिका 5 से ज्ञात होता है कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के मध्य t का परिगणित मान 0.06 है जो स्वतंत्रता अंश 198 पर तालिका मान 1.97 से कम है अतः इसे सार्थक नहीं कहा जा सकता है। इसीलिए शून्य परिकल्पना "सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकार किया जाता है अर्थात कहा जा सकता है कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। रेखाचित्र 1 से स्पश्ट होता है कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों का मध्यमान 77.00 है जोकि महिला अभिभावकों के मध्यमान 77.04 से कम है। दोनों समूहों के मध्यमानों के इस अन्तर को सार्थक नहीं कहा जा सकता हैं। सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में सार्थक अन्तर न होने का कारण पुरूश अभिभावकों के समान महिला अभिभावकों में भी शिक्षा प्रचार–प्रसार में वृद्धि हुई है। जिसके परिणाम स्वरूप दोनों समूह का सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति समान दृश्टिकोण हो सकता है। पूर्व में किये शोध अध्ययनों में रेड्डी एवं रॉव (2019) ने भी स्वीकार किया कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–6

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतत्र्यांश	क्रान्तिक मूल्य	टी–मूल्य	टिप्पणी
शहरी अभिभवाक	66	76.62	4.37	198	1.97	0.93	सार्थक नहीं
ग्रामीण अभिभावक	134	77.22	4.30				

सार्थकता स्तर 0.05

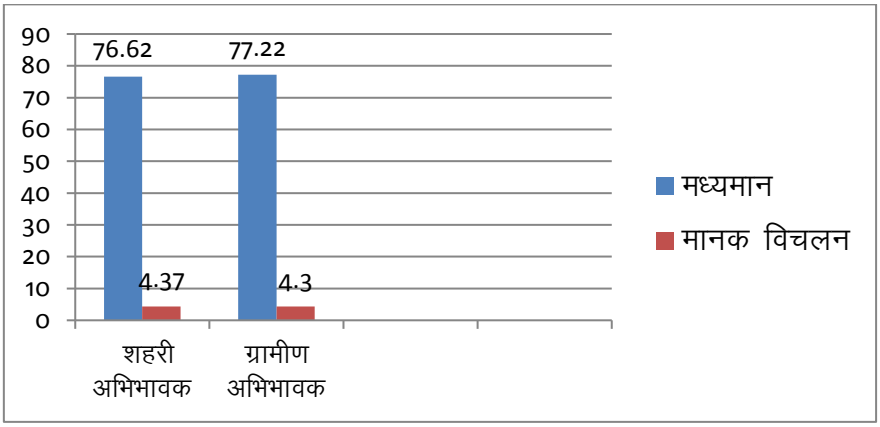

रेखाचित्र–2

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तालिका 6 से ज्ञात होता है कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के मध्य t का परिगणित मान 0.93 है जो स्वतंत्रता अंश 198 पर तालिका मान 1.97 से कम है अतः इसे सार्थक नहीं कहा जा सकता है। इसीलिए शून्य परिकल्पना "सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकार किया जाता है अर्थात कहा जा सकता है कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। रेखाचित्र 2 से स्पश्ट होता है कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रति शहरी अभिभावकों का मध्यमान 76.62 है जोकि ग्रामीण अभिभावकों के मध्यमान 77.22 से कम है। मध्यमानों के इस अन्तर को सार्थक नहीं कहा जा सकता हैं। सर्व शिक्षा अभियान के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोण में सार्थक अन्तर न होने का कारण शहरी क्षेत्रों के अभिभावकों के शिक्षित होने के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावकों में भी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में तीव्र गति से वृद्धि हुई है जिससे दोनों वर्गों का सर्व शिक्षा अभियान के प्रति एक साथ जागरूक होना हो सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत कार्य से प्राप्त निश्कर्श अग्र प्रकार है–

1. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूश अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृश्टिकोण में अन्तर न होने का कारण सर्व शिक्षा अभियान के प्रति समान रूप से जागरूक है।
2. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावभीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि शहर के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार समान रूप से हो रहा है।

शैक्षिक निहतार्थ

1. प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण हेतु सर्व शिक्षा अभियान एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। सर्व शिक्षा अभियान के सही से क्रियान्वयन पर ही उसे प्रभावी व अप्रभावी बनाया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निश्कर्श शिक्षकों, छात्रों व अभिभावकों को सर्व शिक्षा अभियान के प्रति अभिभावकों के दृश्टिकोण को समझने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर अभिभावकों को सर्व शिक्षा अभियान के प्रति और अधिक जागरूक कर उनकी प्रतिभागिता को बढ़ाया जा सकता है जो इस योजना के उद्देभयों को प्राप्त करने सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सन्दर्भ सूची

गुप्ता, एस. पी. (2017). अनुसंधान संदर्भिकाः सम्प्रत्य, कार्यविधि एवं प्रविधि. इलाहाबादः भारदा पुस्तक भवन.

जैन, एस. एण्ड मित्तल, एम. (2011). एसेसमेन्ट ऑफ सर्व शिक्षा अभियान इन सर्वोदय स्कूल ऑफ देहली, इण्डियन एजूकेभानल रिव्यू, 49(2), 15–29.

कुमारी, एस. एण्ड गिल, एस. के. (2016). इफेक्टिवनेभा ऑफ कमयनिटी पारटीसिपेभान इन सर्व शिक्षा अभियान, सूरजपुंज जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लिनरी रिसर्च, 6(2), 198–207.

लाल, आर. बी. (2007). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन.

मण्डल, पी., दास, एल., पांडा, एस. एण्ड पाल, पी. के. (2018). एटीट्यूड ऑफ गार्जियन टूवार्डस सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) अमाँग एग्रो–ऑक्युपेभानल कम्युनिटीज ऑफ वेस्ट बेंगाल, इण्डिया, इण्टरनेभानल जर्नल ऑफ इनक्लूजिव डेवलेपमेण्ट, 4(1), 15–20.

रॉव, वी. एस. (2009). लैक ऑफ कम्युनिटी पारटीसिपेभान इन सर्व भिक्षा अभियान : ए केभा स्ट्डी, इकोनोमिक एण्ड पॉलिटीकल वीक्लेय, एक्सएलआईवी(8), 61–64.

रेड्डी, के. वी. एस. एण्ड रॉव, एन. वी. (2019). परसेप्शन ऑफ पैरेन्टस टूवार्डस राजीव विद्या मिशन (एसएसए) प्रोगराम, इन्टरनेशनल जर्नल इन मैनेजमेन्ट एण्ड सोसियल साइन्स, 7(3), 75–82.

वर्मा, जी. एस. एण्ड कुमारी, एस. (2008). भारत मे शिक्षा प्रणाली का विकास, मेरठः लायल बुक डिपो.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language